वार्षिक 200/- रुपये जनवरी 2026 वर्ष 28 अंक 03 पृष्ठ - 28 मूल्य 20/-रु.

गोसम्पदा

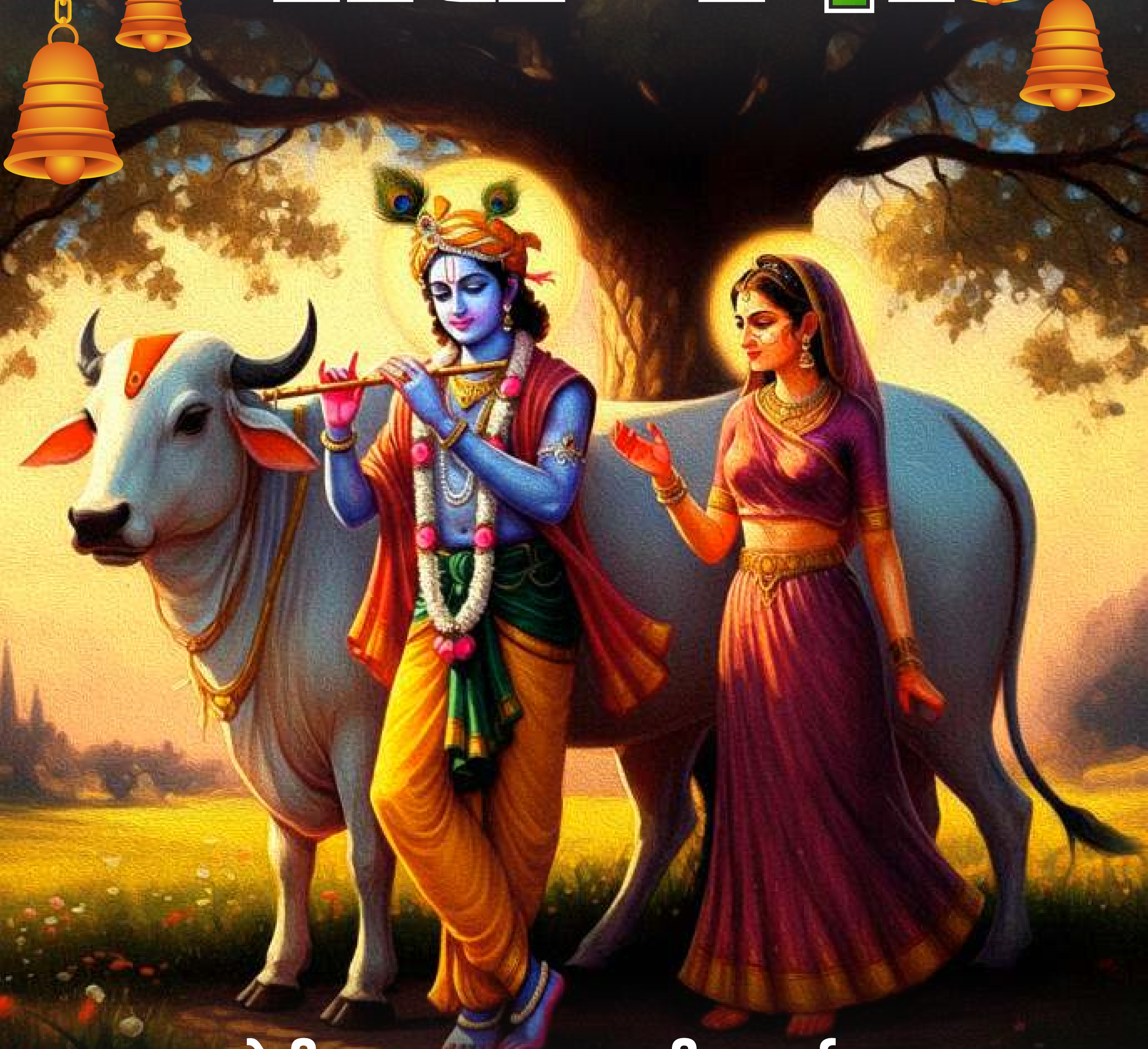

मोदी सरकार का राष्ट्रीय कर्तव्य

गोवंश-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध अनिवार्य

सम्पादकीय

गणतंत्र दिवस पर विशेष

मोदी सरकार का राष्ट्रीय कर्तव्य
गोवंश-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध अनिवार्य

स्मरण रहे, अंग्रेजों ने भारत आगमन के कुछ समय पश्चात ही देश में गोवंश–हत्या आरंभ करा दी थी। उन्होंने एक षड्यंत्र के तहत योजनाबद्ध ढंग से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शत्रुता पैदा करने के लिए गोहत्या प्रारंभ कराई थी। वे अपने षड्यंत्र में काफी हद तक सफल भी रहे। दुष्परिणामस्वरूप आजादी मिलने के 78–79 वर्ष बाद भी गोहत्या जैसा जघन्य–अक्षम्य अपराध बंद होने के बजाय बढ़ता ही गया और कांग्रेसी शासन के दौरान तो मुस्लिम तुष्टिकरणनीति के अंतर्गत उसे निरन्तर प्रोत्साहन भी दिया गया। अब भाजपा सरकार केन्द्र में लगभग ग्यारह वर्ष से है, लेकिन ऐसा लगता है कि इस विषय में कुछ करने की बात तो दूर है, किसी प्रकार का विचार–विमर्श, चिंतन–मनन भी होता हुआ नहीं दिखाई दे रहा है। ध्यान रहे, भाजपा के घोषणा पत्र में प्रारंभ से ही गोवंश–हत्या रोकने का विषय शामिल रहा है। इसलिए मोदी सरकार का यह राष्ट्रीय कर्तव्य है और घोषणा पत्र के अनुसार भी गोवंश–हत्या को संपूर्ण देश में प्रतिबंधित करने के लिए त्वरित कार्यवाही करे। अतः आगामी गणतंत्र दिवस (2026) का स्वर्णिम अवसर है जब इसकी घोषणा की जाये।

यथार्थ में गोमाता सृष्टि के प्रारंभ से ही पूज्यनीय–वंदनीय अभिनंदनीय रही है, और अभी भी है। यह वात्सल्य की प्रतिमूर्ति और वेद की ऋचाओं–सी पावन है। कहा गया है **"गावो विश्वस्य मातरः"** अर्थात् गाय किसी एक की मां नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व की मां है। उनकी ममता का आंचल संपूर्ण मानवजाति के लिए एक समान है। समभाव से वे सभी का अपने अमृतरूपी दुग्ध से सिंचन और पोषण करती हैं, उसके लिए हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सहित सभी मानवों में कोई भेद–भाव नहीं है, इसीलिए वे सभी की मां हैं। बावजूद इसके आज वर्तमान में गोहत्या के कारण उनके अस्तित्व पर ही आसन्न संकट दिखाई दे रहा है। अभी भी हम यदि नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ी के लिए गाय इतिहास की वस्तु हो जाएगी। इसीलिए अब मोदी सरकार का परम कर्तव्य है कि त्वरित राष्ट्रीय कानून बनाकर संपूर्ण देश में गोवंश–हत्या प्रतिबंधित कर भारत के ललाट पर लगा गोहत्या का काला कलंक तत्काल मिटाए।

नैसर्गिक रूप से गाय व्यक्ति की जीविका का प्रमुख साधन है। उसके दूध–दही और मल–मूत्र से निर्मित भोज्य पदार्थ, औषधियां, प्रसाधन, ईंधन, मनुष्य की जीविका के साधन तो हैं ही और धन प्राप्ति के स्रोत भी हैं। साथ ही मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक किये जाने वाले सभी सोलह संस्कारों में उसके गव्य की आवश्यकता अनिवार्य होती है। पंचगव्य के बिना कोई यज्ञ–अनुष्ठान आदि धार्मिक कार्य संपन्न नहीं किये जा सकते हैं, किन्तु अज्ञानतावश आज उसकी घोर उपेक्षा की जा रही है।

"वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना का अवलंबन करने वाले आध्यात्मिक–अहिंसक (पूर्व में) राष्ट्र भारतवर्ष में यदि लोग बेजुबान व निरीह प्राणियों की हत्या करके उनका मांस भक्षण करते हैं तो बड़ी ही लज्जा के साथ लिखना–कहना पड़ रहा है कि ऐसे लोगों की आत्मा असंदिग्धरूप से संवेदनशून्य अथवा मर चुकी है, क्योंकि जो लोग दूसरे प्राणियों की पीड़ा को नहीं समझ सकते हैं वे सुखी और स्वस्थ कैसे रह सकते हैं? वर्तमान में व्यक्ति इतना भोगवादी व स्वार्थी बन गया है कि वह उसी वस्तु की ओर आकर्षित होता है, जिससे उसे आर्थिक लाभ मिल सके। इस दृष्टि से आज गाय को लाभकारी प्राणी नहीं माना जा रहा है, जिसके कारण कुछ स्वार्थी मतान्ध लोगों द्वारा गोहत्या की जा रही है, लेकिन यह सब उनकी अज्ञानता का ही दुष्परिणाम है। इन जटिल परिस्थितियों में यदि मनुष्य सुखी–संपन्न और स्वस्थ रहना चाहता है तो पुनः गाय–गोवंश के माहात्म्य को स्थापित करना होगा। यदि सही अर्थों में विवेक और ज्ञानपूर्वक गोवंश की रक्षा व संवर्धन किया जाए और उसके दूध–घी व गोबर–गोमूत्र का सही उपयोग किया जाए तो दूध न देने वाली गाय भी इतना उत्पाद दे सकती है, जो उसके खाने पर होने वाले खर्च से भी अधिक लाभ दे सकता है, इसको व्यावहारिक स्तर पर प्रमाणित किया जा चुका है। इसीलिए गाय को भारतीय ऋषि–मुनियों ने केवल धार्मिक रूप से ही महत्वपूर्ण प्राणी नहीं माना, अपितु शरीर विज्ञान की दृष्टि व आर्थिक दृष्टि से भी गोमाता का दूध, दही, घी, गोमूत्र व गोबर अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुए हैं। अतः गोवंश की रक्षा व संवर्धन के लिए आवश्यक है कि देश भर में पंचगव्य (विशेषकर गोबर–गोमूत्र) आधारित उत्पादों का व्यावसायिक उत्पादन प्रारंभ हो ताकि गोपालक को गोबर–गोमूत्र की भी उचित कीमत मिले और गोमाता–गोवंश को बचाया जा सके। सत्यतः गोमाता संपूर्ण मानव जाति का पालन–पोषण करने में सक्षम होने के साथ ही मनुष्य का परम कल्याण (मोक्ष) करने में भी समर्थ है।

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष - 28 अंक-03 जनवरी - 2026 पृष्ठ - 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22
मो. : 8130049868
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 20/-
वार्षिक : रु. 200/-
आजीवन : रु. 2000/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
गाय की छाया भी है परम कल्याणकारी	04
गोवंश की उपेक्षा : स्वयं की उपेक्षा	06
सनातन धर्म में गोरक्षा और गोसेवा	09
गोमाता का 'ऋण' कभी चुकाया नहीं जा सकता!	10
दैनिक जीवन में गोमूत्र अर्क का महत्व	12
वर्तमान पर ध्यान	13
जयपुर में अखिल भारतीय बैठक	14
अखिल भारतीय बैठक, जयपुर में लिए गये महत्वपूर्ण निर्णय	18
गोरक्षा विभाग की अ. भा. संच बैठक अहमदाबाद में संपन्न	19
जालोर बनेगा 'एनर्जी हब' : पराली और गोबर से दौड़ेंगीं गाड़ियां	21
Cow Sustainability	22
Gaumata and her Care	24

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर - 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

इंदल सिंह भदौरिया

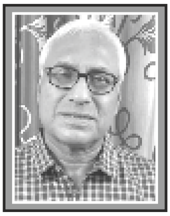

गाय की छाया भी है परम कल्याणकारी

अभिवंदित आर्ष सद्ग्रंथों में गारिमामयी गौओं को संसार की माता माना गया है तथा बृषभों को पिता। इनकी आराधना–उपासना एवं पूजा करने से सम्पूर्ण पितरों और स्वर्ग के सभी देवताओं की पूजा हो जाती है –

पितरो बृषभा ज्ञेया गावो लोकस्य मातरः
तासां तु पूजया राजन् पूजिताःपितृदेवता।।
(महाभारत, आश्व० वैष्णव०)

पावन पुराणों में वर्णित व्याख्यानों के अनुसार सर्ववंदित परमपूज्य पितामह ब्रह्माजी ने दक्षप्रजापति को सृष्टिकर्ता के रूप में अधिकृत किया था। तदनुसार दक्षप्रजापति जी ने सबसे प्रथम मनुष्य की रचना की। उसे सबसे शक्तिशाली एवं दीर्घायु बनाने के लिए वे भगवान ब्रह्मा जी से अनुरोध करने हेतु तुरंत ब्रह्मा जी के पास गये। संयोगवश उस समय ब्रह्मा जी अतिश्रमित थे। फलतः वे अमृतपान कर विश्राम की मुद्रा में थे। अचानक दक्षप्रजापति के आगमन से ब्रह्माजी चिंतित हो गये, तदोपरांत उन्होंने प्रजापति से असमय आने का कारण पूछा। प्रजापति दक्ष ने अपनी सम्पूर्ण व्यथा कथा सुनाई, उसे सुनकर ब्रह्मा जी चिंतामग्न हो गये। तत्क्षण उन्हें वमन हुआ। अमृत वमन के साथ उनके मुखारविंद से गौरूपिणी स्वरुप विसर्जित हुआ। भगवान ब्रह्मा जी ने उसका नामकरण गोमाता के रूप में किया। इसके उपरांत पितामह ब्रह्माजी ने अति प्रसन्न होकर नवोदिता गोमाता को सृष्टिकर्ता दक्षप्रजापति को प्रदान करते हुए कहा कि यह गोमाता ही आपकी प्रत्येक समस्या का सम्पूर्ण समाधान करेगीं। ब्रह्मा जी की इस अहेतुक अनुकम्पा से अभिभूत दक्षप्रजापति जी ने ब्रह्मा जी को स्तुत्य साधुवाद दिया और सृष्टि सृजन कार्य में ब्रह्माज्ञा से संलग्न हो गये।

इसीलिए **हमारे शास्त्रों में गोमाता को ब्रह्मसुता कहकर उनकी गौरवशाली गरिमा का गुणगान किया गया है। सभी धर्म ग्रंथों में गाय को जगन्माता के नाम से अलंकृत किया गया है।** गोमाता की शुचिता को समादरित करने हेतु देवताओं ने मुक्तकंठ से इसकी स्तुति कर गाय के विभिन्न अंगों में अपना निवास–स्थान बनाया है। इसके छहों अंग ––शिक्षा, कल्प, नियुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और पद, जटा, शिखा, रेखा आदि क्रमों के साथ सभी वेद गौओं में ही प्रतिष्ठिथापित हैं।

गाय को पशु नहीं, अपितु उसे शास्त्रदृष्ट्या माना

जाता है। हमारे आध्यात्मिक सद्ग्रंथों में स्पष्ट लिखा है – **"तिलं न धान्यों पशवो न गावः"** गोमाता में सभी पवित्र तीर्थों व हमारी संस्कृति की जीवन रेखा पावन नंदियों का सुवास है। विष्णुधर्मोत्तर शास्त्र में उल्लेख है कि "गौरुपी तीर्थों में गंगा आदि सभी नदियों तथा तीर्थों का आवास है, उनकी परम पावन धूलि में पुष्टि विद्यमान है, उनके गोबर में साक्षात् लक्ष्मी विराजमान है और उनको प्रणाम करने से धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः गोमाता सदा–सर्वदा प्रणाम करने योग्य हैं।

गवां हि तीर्थे वसतीह गंगा।
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतो च धर्म–
स्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात।।
(विष्णुधर्मोत्तर ०२/४२)५८)

गाय की छाया भी परम पावन व शुभ एवं मंगलमय मानी जाती है। यात्रा आदि शुभ कार्यों के शुभारंभ में गाय का दर्शन कल्याणकारी माना जाता है। परम श्रीरामभक्त कविकुल शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में भगवान श्री राम जी की बारात के शुभ प्रस्थान के सुअवसर पर सुन्दर शगुन की श्रृंखला में अपने शिशु को दूध पिलाती गाय दर्शन को बहुत शुभ सूचक माना है ––

बनइ न बरनत बनी बराता,
होहिं सगुन सुंदर सुभदाता।
लोवा फिर फिर दरसु देखावा,
सुरभि सनमुख सिसुहि पिलावा ।।
(श्रीरामचरितमानस ०१/३०३/१–५)

गाय का दर्शन शुभ और परम कल्याणकारी होता है, उसी तरह गाय का दूध, गोबर और मूत्र भी पवित्र, पुष्टिकारक व तुष्टिकारक बताया गया है। गाय के दूध से जो घृत (घी) बनता है उसे अमृत कहा जाता है। इसका उल्लेख श्रीमद्भागवत में किया गया है कि जब परम सुंदरी स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी महाराजा पुरुरवा के पास आई तो उसने गाय के घी को अमृत समतुल्य मान कर गाय के घी का ही पान किया था।

"घृतं मे वीर भक्ष्यं स्यात्"
(श्रीमद्भागवत ० ६/१४/२२)

गोमाता के गोबर में साक्षात् लक्ष्मीजी का और गोमूत्र में गंगाजी का निवास माना गया है। इसीलिए गोमूत्र व गोबर को पावन और पुनीत बताया जाता है।

गोबर से लिपे आवास शुद्धता के साथ–साथ विभिन्न रोग रोधी होते हैं। इसीलिए हमारे शास्त्रों व पुराणों में गाय के गोबर से भवनों, सभागारों, देव मंदिरों एवं यज्ञशालाओं को लेपन की पावन परम्परा का उल्लेख मिलता है।

सभा प्रपा गृहाश्चापि देवतायतनानि च।
शुद्धियन्ति शकृता यासां किं भूतामधिकं ततः।।
(महाभारत, आश्व० वैष्णव०)

गौओं का निवास (गोशाला) पर्यावरण को पावन व शुद्ध बनाता है, गोपालन से उस स्थान की स्वच्छता, शुचिता, शोभा एवं श्रीसम्पन्नता बढ़ जाती है। गोमाता का निवास जिस स्थान (घर) में होता है, वहां के सारे पाप–ताप स्वतः ही विनष्ट हो जाते हैं।

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुश्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति।।
(महाभारत, अनु०५१/३२)

गोमाता अखिल विश्व की जननी हैं। वे प्राणीमात्र का पालन, पोषण, संरक्षण और संभरण करतीं हैं, तभी तो गाय को जगन्माता की गौरवशाली उपाधि से विभूषित किया गया है।

हरिशंकर दीक्षित (पथिक)

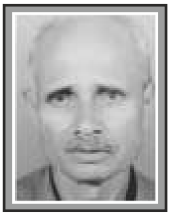

गोवंश की उपेक्षा स्वयं की उपेक्षा है

प्रथम संवाददाता देवर्षि नारद मृत्युलोक का भ्रमण कर बैकुण्ठ धाम पहुँचे। भगवान श्री विष्णुहरि ने उनका स्वागत सत्कार कर कुशलक्षेम पूछते हुए कहा– देवर्षि आप धरती का भ्रमण करके आ रहे हैं, कहिये मेरी जन्मभूमि मथुरा के क्या समाचार हैं। देवर्षि नारद ने उत्तर देते हुए कहा, भगवन्! आपकी जन्मभूमि मथुरा में तो आपके मन्दिरों की पर्याप्त संख्या है और आपका गुणगान करने वाले कथावाचकों की बहुलता है। अधिकांश कथावाचकों के विशाल व विस्तृत मठ भी हैं। अनेक मठों में असहाय वृद्धाओं तथा दिव्यांगों की सेवा सब प्रकार हो रही है। यह सब आपके सम्पन्न भक्तों के दान पर चल रहा है। अनेक सेवक वैतनिक आधार पर नियुक्त हैं। दूरदर्शन पर आपकी लीलाओं का प्रसारण

लोग पत्थर के नन्दी की पूजा जितने आदर के साथ करते हैं, उससे कहीं अधिक अनादर जीवित नन्दी का करते हैं। खेतों की धारदार बाड़ों और सड़कों पर भारी वाहनों से आहत होकर मानव जीवन का प्राकृतिक आधार गोवंश आज रौरव नर्क से भी भीषण यातना भोगते हुए अपना अस्तित्व खोता जा रहा है।

कथारूप में हो रहा है। श्रद्धालु भक्त भावविभोर होकर नृत्य करते दिखायी देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण मथुरा आने वाले भक्तों सहित आपकी भक्ति में अपनी सुधबुध भूल चुकी है। यही नहीं लगभग समस्त मठों में गोआश्रय स्थल हैं और प्रत्येक में सैकड़ों गायों की सेवा होती है।

उक्त वार्तालाप के चलते ही अकस्मात भगवान शंकर का आगमन हुआ। देवर्षि नारद और भगवान श्रीविष्णुहरि दोनों ने उनका स्वागत किया। शिव जी आसन पर विराजमान हुए। उन्होंने गोवंश की चर्चा सुन ली थी, इसलिये

देवर्षिनारद से पूछा देवर्षि! आप धरती का भ्रमण कर आये हैं, सुना है वहाँ गोवंश पर भारी संकट आया है। विशेषकर नन्दी सर्वाधिक पीड़ित–प्रताड़ित हैं। मुझे विदित हुआ है कि गाय को लोग दुग्ध देने की अवधि तक कुछ चारा दाना देते हैं, किन्तु गोवत्स को वाँछित दूध तक नहीं देते। जब गाय दूध देना बन्द कर देती है तो उसे वत्स सहित घर से भगा देते हैं। पुनः दुग्धदायी होने पर कोई उसे बाँध लेते हैं और दुग्धहीना होने पर पुनः घर से भगा देते हैं। यह क्रम लगभग सम्पूर्ण भरत में चल रहा है। पँजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और बिहार में दशा अत्यन्त शोचनीय है।

देवर्षि! हमारा नन्दी अपने कुटुम्बीजनों की इस भीषण दुर्दशा से बहुत दुखी रहता है। वह मुझसे कहता है हे सदाशिव मेरा वंश जो वृहद भारतवर्ष में मनुष्यों द्वारा पालित–पोषित और रक्षित ही नहीं अधिक मातृ–पितृवत पूजनीय–आदरणीय रूप में परिवार का अंग था, वही आज मनुष्यों द्वारा उपेक्षित–तिरस्कृत होकर नाना प्रकार के कष्ट–दुखों को सहता हुआ आहत होकर कलपता–सिसकता मारा–मारा फिरता अपना अस्तित्व ही खोता जा रहा है। वह मुझसे कहता है, हे पशुपतिनाथ! आपकी प्रजा में विशेषकर धरती की जैविक सृष्टि की निरन्तरता का मूलाधार, उन्हीं मनुष्यों द्वारा उपेक्षित–पीड़ित, प्रताड़ित होकर मारा–मारा फिरता हुआ, कलपता –सिसकता, विलुप्ति की कगार तक ठेला–ढ़केला जा रहा है, जिन पर उसके पालन– पोषण और रक्षा का दायित्व है। हे विष्णुहरि! आपने मनुष्य की रचना इसीलिये तो की है कि वह गोवंश का पालन–पोषण और रक्षा भलीभाँति करता हुआ उसकी शक्ति–सम्पदा का सदुपयोग करता हुआ अपना जीवनयापन करे। आदिकाल से यही क्रम चला आ रहा था, किन्तु तीव्र आर्थिक विकास हेतु मनुष्यों ने जो अवैज्ञानिक मशीनी औद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भ की है उसके दुष्प्रभाव के कारण आज गोवंश की उपयोगिता ही समाप्त हो चुकी है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो निकट भविष्य में गोवंश ही नहीं, अन्यान्य पशु–पक्षियों की प्रजातियाँ सर्वथा लुप्त हो जायेंगीं। पक्षियों की कृषि मित्र प्रजातियाँ तो लगभग समाप्त ही हो गयी हैं। घोड़े–गधे और खच्चर आदि की भी यही दशा है। घोड़ों का उपयोग आवागमन के क्षेत्र में लगभग समाप्त हो चुका है। यही दशा गधों और खच्चरों की भी है।

गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने का अति सरल किन्तु गूढ़ अर्थ है– गोपालन, पोषण, आदर, सम्मानपूर्वक करते हुए, कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों के आधार पर जीवनयापन करना ही गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करना है।

हे विष्णुहरि! हमारा नन्दी इस कारण बहुत दुखी रहता है। वह कहता है कि लोग पत्थर के नन्दी की पूजा जितने आदर के साथ करते हैं, उससे कहीं अधिक अनादर जीवित नन्दी का करते हैं। खेतों की धारदार बाड़ों और सड़कों पर भारी वाहनों से आहत होकर मानव जीवन का प्राकृतिक आधार गोवंश आज रौरव नर्क से भी भीषण यातना भोगते हुए अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। वह मुझसे कहता है कि पशु–प्राणी आपकी प्रिय प्रजा हैं, इसीलिये आप **पशुपतिनाथ** के नाम से भी जाने जाते हैं। गोवंश सहित अन्यान्य पशुओं की दुर्दशा से परिचित होकर भी शान्त हैं। सम्भवतः आप डमरु बजाना या नृत्य करना सर्वथा भूल चुके हैं अथवा उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब व्यथित धरती धेनुरूप धारण कर अपने दुखों– कष्टों का वर्णन

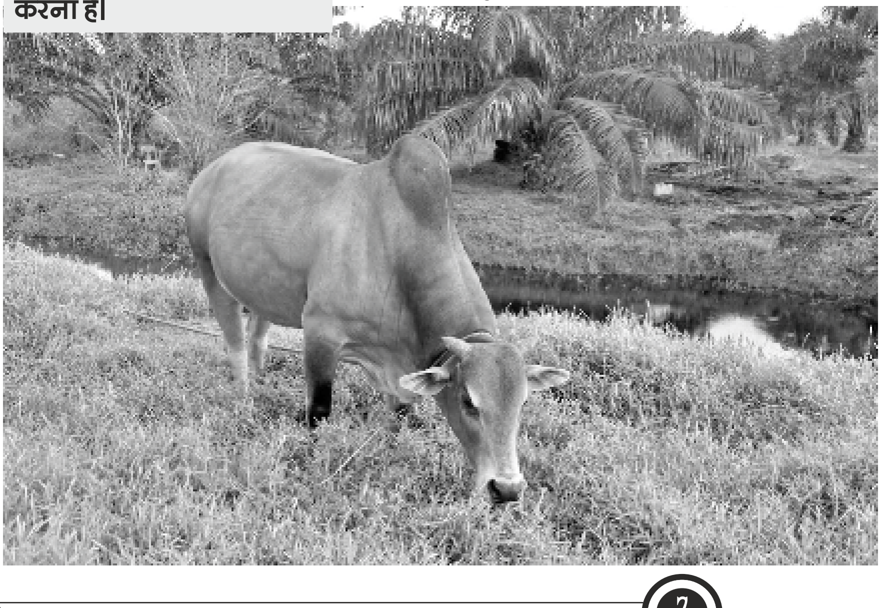

आपके पास आकर करे और कोई कवि उस वर्णन को काव्य में इस प्रकार करे –

''व्यथित धरा करती पुकार
शिवशंकर अब तो बोलो।
डम–डम–डम–डम डमरु बजाओ
नेत्र तीसरा खोलो।।''

भगवान शिव की बातें सुनकर भगवान श्री विष्णुहरि ने कहा, हे शिव! यह कालगति की दशा है। मैंने जब मनुष्य की रचना अति सुविधायुक्त शरीर और विलक्षण उन्नतशील बुद्धि देकर समस्त प्राणियों में सर्वोत्तम–सर्वश्रेष्ठ रूप में की थी, तब मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वह मेरी इच्छा, ''कल्पान्त तक धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि को गतिशील बनाये रखने वाली प्रकृति का सहयोग करने के स्थान पर उसका शोषण उसे नोच–खसोट कर करेगा।'' आज का मनुष्य अपने कर्तव्यों को जान–बूझकर अनदेखा करते हुए, स्वयं परिश्रम करना नहीं चाहता या कम–से–कम परिश्रम द्वारा अधिक उत्पादन के मशीनी जाल में फँसकर विलासी–मदमाता होता जा रहा है।

अभी देवर्षि नारद ने बताया कि मेरी जन्मभूमि मथुरा में अनेक भव्य विशाल मठ हैं, जहाँ मेरे भजन कीर्तन और लीलाओं का वर्णन कथावाचक करते हैं और दान के धन द्वारा गोआश्रय स्थल भी चलाते हैं। इन मठाधीशों में कितने ऐसे हैं जो नर गोवत्स की शक्ति का सदुपयोग करते हैं। इन्हें दान में इतना धन मिलता है कि ये लोग कृषि भूमि क्रय कर उन्नत कृषि यन्त्रों द्वारा बैलों का उपयोग कृषि और तेल–गुड़ उद्योगों में करते हुए आगन्तुक कृषक भक्तों को प्रेरित कर सकते हैं। वर्तमान विलासिता के युग में यह कार्य कठिन तो है किन्तु असाध्य नहीं। मुझे दुख है कि कोई भी कथावाचक गोमाता की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने के उपदेश की उचित या सटीक व्याख्या नहीं करता। गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करने का अति सरल किन्तु गूढ़ अर्थ है। गोपालन–पोषण आदर–सम्मानपूर्वक करते हुए, कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों के आधार पर जीवनयापन करना ही गाय की पूँछ पकड़कर वैतरणी पार करना है।

इसके उपरान्त भगवान श्री विष्णुहरि ने कहा, हे सदाशिव! मेरी माया प्रकृति, जिस पर सृष्टि को गतिशील बनाये रखने का दायित्व है; वह मनुष्यों द्वारा की जा रही कर्तव्यों (धर्म) की अवहेलना से दुखी होकर उन्हें निरन्तर चेतावनी दे रही है। मानवी दुराचरणों के कारण वैश्विक ताप में होने वाली वृद्धि से धरती पर पुनः हिमयुग आने की सम्भावना है। यदि मनुष्य विलासिता का परित्याग नहीं करेगा तो निकट भविष्य में ऐसा होना अनिवार्य है। जहाँ पानी का अभाव था वहाँ भीषण बाढ़ और तपते मरुस्थलों में हिमपात देखकर भी यदि मनुष्य नहीं चेतेंगे तो परिणाम भीषण भयावह होना तय है। यह खण्ड प्रलय की प्राकृतिक चेतावनी ही है।

धर्म की सटीक व्याख्या न करने वाले मठाधीस तक विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं। उन्हें चाहिये कि अनावश्यक उपभोग से स्वयं बचें तब ही वे उपदेश देने के अधिकारी–पात्र हो सकते हैं। मनुष्य के कर्तव्यों की ही एकवचनीय संज्ञा धर्म है। यह उसी प्रकार सनातन है जिस प्रकार अनन्त आकाश। तात्पर्य यह है कि सृष्टि रचना भी हम धर्म के आधार पर ही करते हैं और कल्पान्त में इसका अन्त भी। अभी कल्पान्त होने में बहुत काल शेष है, किन्तु खण्डप्रलय तो मानवी आचरण पर आश्रित होती है।

चलभाष – 8765805322

डॉ. शारदा मेहता

सनातन धर्म में गोरक्षा और गोसेवा

वैदिक काल से ही हमारे सनातन धर्म में गाय का अत्यधिक महत्व है। गाय को हमारे यहाँ माता के समान सम्माननीय स्थान प्राप्त है। भारतीय संस्कृति में गोदान को सर्वोत्तम दान माना जाता है। दान के विभिन्न स्वरूप होते हैं यथा अनुदान, वस्त्रदान, स्वर्णदान, रजत दान, अंगदान के अन्तर्गत किडनी, नेत्र, त्वचा, लिव्हर, रक्त तथा भूमिदान से भी बढ़कर गोदान को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। भारतीय संस्कृति में मृत्यु के पूर्व गोदान करने की परम्परा है, जो आज भी प्रचलित है। गोसेवा करने से आशीर्वाद प्राप्त होते हैं। राजा दिलीप ने संतान प्राप्ति के लिये नन्दिनी गाय की सेवा की। गाय के आशीर्वाद से उन्हें सन्तान सुख प्राप्त हुआ। गुरु वसिष्ठ और विश्वामित्र का कामधेनु गाय के लिये किया गया युद्ध हमारे पौराणिक ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इक्ष्वाकु के भ्राता नृग नामक राजा राज्य करते थे। उन्होंने पुष्कर तीर्थ जाकर ब्राह्मणों को सुवर्ण भूषित गायें तथा बछड़े जिनकी संख्या लगभग एक करोड़ थी दान में दे दी। उन गायों में से एक गाय वापस आकर राजा की अन्य गायों में मिल गई। राजा इस बात से अनभिज्ञ था। राजा ने उसी गाय को पुनः किसी ब्राह्मण को दान में दे दिया। गाय का नाम शबला था। यह कहानी विस्तृत है। स्थानाभाव के कारण यहाँ नहीं लिखी है। दो ब्राह्मणों में झगड़ा होने लगा। उन्होंने राजा नृग को शाप दिया कि वह गिरगिट बन जायेगा "राजा गिरगिट बन गया।" गाय के

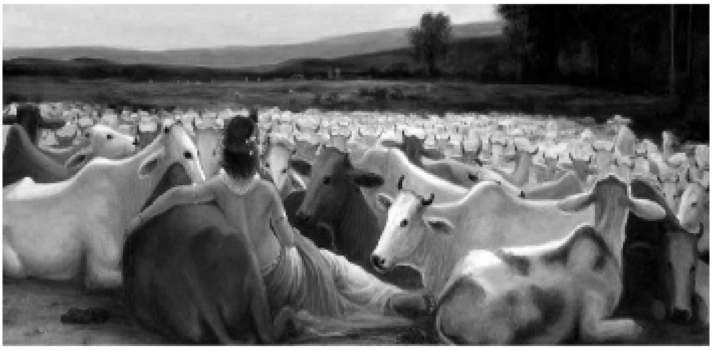

अंगों में तैंतीस कोटि देवी–देवता निवास करते हैं। गाय का गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, छाछ आदि सभी जीवनोपयोगी वस्तुएँ हैं। आयुर्वेद के अनुसार इनका प्रयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है।...

हमारी सनातन परम्परा में प्रत्येक घर से प्रतिदिन पहली रोटी गोमाता के लिये निकाली जाती है। गाय भी समय पर आकर रंभाती है और रोटी खाकर चली जाती है। यह एक अच्छी परम्परा है। कई दानदाता गोशालाओं में घास, खली, रोटी आदि के लिये दान करते हैं। प्राचीन समय में राजा, महाराजाओं के यहाँ असंख्य गायें होती थीं। कोई भी शुभ कार्य के पश्चात् राजा गोदान करते थे। ***हमारी परम्परा में गाय का संवर्धन हो, उसकी रक्षा हो, इसलिये वत्स द्वादशी के दिन गाय और बछड़े का पूजन किया जाता है। ज्वार, मक्के की रोटी तथा चने से निर्मित बेसन खिलाया जाता है।*** आजकल कसाईखाने में गोवंश को हत्या करने के लिये ले जाया जाता है, जो घोर निन्दनीय और महापाप है। गाय जैसी पवित्र, निरीह, भोले–भाले प्राणी की इस प्रकार हत्या एक अक्षम्य अपराध है। हमारे समाज में जिस गाय को माता का स्थान दिया गया है, उस निरपराध प्राणी की यदि जघन्य हत्या की जाये तो उसके लिये कठोर दंड का प्रावधान किया जाना चाहिये। ईश्वर के बाद यदि कोई बड़ा स्थान है तो वह गोमाता का है। शहरों में बेसहारा प्राणी के रूप में गायों को सड़कों पर, चौराहों पर, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन आदि स्थानों पर देखा जा सकता है। इनकी रक्षा की जानी चाहिये। इन्हें गौशालाओं में रखना चाहिये। भगवान कृष्ण की गोसेवा प्रसिद्ध है। उन्होंने प्रचण्ड वर्षा वेग से गोधन की रक्षा करने के लिए अपनी कनिष्ठा अँगुली से गोवर्धन पर्वत को उठा लिया था। वर्तमान में भी चरवाहा गाय को बड़े यत्न से चरने के लिये ले जाते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। कहा भी गया है–

गौ में ही गोविन्द समाये
फिर काहे गौसेवा न भाये।।

पूजा पाराशर (कवयित्री, स्वतंत्र लेखिका)

गोमाता का 'ऋण' कभी चुकाया नहीं जा सकता!

माता जन्म देती है; अपना दूध पिलाती है; बच्चे को पालती है; उसे बड़ा करती है और उसके अच्छे स्वास्थ्य, अच्छे जीवन के लिए ईश्वर से सदैव प्रार्थना करती है। बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब गैया मैया उसे जीवन भर दूध पिलाती है और उसके अच्छे स्वास्थ्य के लिए ईश्वर रूप में सदैव आशीर्वाद देती रहती है। संतान भले ही बड़ा होकर इस बात को याद ना रखें या अनदेखा कर दे, परंतु ये दोनों मैया निस्वार्थ प्रेम से अपनी संतान के लिए ही जीती हैं। क्या कोई संतान ये ऋण कभी चुका सकती है!

मेरा यह लेख उस मैया के लिए समर्पित है जिसका दूध पीकर मैं बड़ी हुई। जब मैंने यह अमृतपान बंद कर दिया तो मेरी मृत समान अवस्था हो गई। ग्रामीण–कस्बे के जन आज भी भाग्यशाली हैं जिन्हें गैया मैया का दूध मिलता रहता है। वहीं शहरों, मुख्य रूप से महानगरों में दुर्भाग्य है कि इस सुधा रस के स्वाद हेतु जीवन तरसता रहता है। मेरे साथ भी यही हुआ। कई प्रयासों के बाद, दो–तीन बार गोमाता का दूध शुरू करने के उपरांत भी बंद करना पड़ा क्योंकि उसमें मात्र मिलावट थी।

शहर में थोड़ी दूर पर जो गौशालाएँ हैं, वहाँ लोगों को सुबह 6:00 बजे से लंबी–लंबी लाइनों में खड़ा होना पड़ता है। उसमें भी एक व्यक्ति के लिए मात्र आधा लीटर दूध ही देने की ही व्यवस्था है। अतः मेरे लिए वहाँ से दूध लेना कभी संभव नहीं हो पाया। मैंने पैकेट दूध कभी नहीं पिया, मात्र चाय हेतु ही प्रयोग में लाती थी। लंबे समय तक गोमाता के दूध से वंचित रही। एक समय था कि बिना दूध पीए नींद भी नहीं आती थी; कभी सो भी जाती थी तो नींद में ही एक बड़ा गिलास दूध का मुँह से लगाकर माँ पिला देती थी। सुबह उठकर मैं उनसे कहती–रात में दूध नहीं दिया! माँ कहती कि पिलाया तो था, सोते–सोते तो पी गई; फिर भी विश्वास नहीं होता था। माँ, पिताजी की ओर संकेत करते हुए कहती–पिलाया कि नहीं? पिताजी कहते कि नींद में पिया था तुमने; तब जाकर मन को शांति मिलती थी

और आज इन महानगरों में एक बूँद के लिए तरस गई।

लंबे समय तक दूध न मिलना, मेरी तबीयत खराब होने का सबसे बड़ा कारण था। मार्च, 2023 मैं अचानक चलने–फिरने में असमर्थ हो गई। दो महीने तक मुझे खड़ा होना भी दुर्लभ था। डॉक्टर के पास गई; जाँच करवाई; कुछ भी नहीं निकला। कुछ समय तक अंग्रेज़ी दवाइयाँ खाईं जिनसे मेरी हालत सुधरने के स्थान पर और गंभीर हो गई। पुनः जाँच करवाने पर विटामिन–डी की कमी निकली। मेरी माँ ने कहा कि दूध– दही न खाने के कारण तबीयत खराब हुई है; जो दूध प्रयोग कर रहे हो वह गाय का दूध नहीं है; इसमें पाउडर की मिलावट है; शरीर को कहाँ से लगेगा। आश्चर्य होता है कि कैसे व्यक्ति स्वार्थ में अँधा होकर पाप कमा रहा है!

मेरी माँ किसी भी प्रकार से मुझे अपने साथ घर (मायके) लेकर आ गईं और बोलीं – अब मैं पिलाऊँगी गैया मैया का दूध, तू देख! बिलकुल ठीक हो जाएगी।

तीन सप्ताह तक मैंने भोला (हमारे घर की गाय का नाम) का दूध पिया। मेरी माँ प्रतिदिन सुबह 1 लीटर का पनीर बनाकर मुझे देती थीं, उसके कुछ देर बाद दूध का एक बड़ा गिलास, फिर दोपहर में मट्ठा/रायता और रात को सोते समय फिर से दूध का एक बड़ा गिलास। मैं, प्रतिदिन भोला के पास बैठकर एक कंडी (उपले का टुकड़ा) जलाकर, उसमें 'कुंगलियम' (वृक्ष से प्राकृतिक रूप से निकलता है; दक्षिण भारत में अधिक प्रयोग किया जाता है; बहुत सुगंधित और औषधि रूप में अनेक गुणों से युक्त स्वास्थ्यवर्धक है)

डालकर, आधा घंटा ध्यान करती। यह अनुभव अद्भुत है; दिव्य है; अवर्णनीय है। बस इतना ही कहूँगी कि इन क्षणों में मुझे न कोई दर्द था, न कोई कष्ट। जब आँखें खोलती तो एक अन्य दुनिया से इस दुनिया में प्रवेश करने का अनुभव होता जो मेरे शरीर और मन के होने का एहसास कराता।

दिन पर दिन मेरी तबियत अच्छी होती गई। थोड़ा–थोड़ा चलने–फिरने भी लगी, अंदर एक ऐसी शक्ति का संचार हो रहा था जो मुझे पहले की तरह खुश रखने के साथ–साथ हिम्मत से भर रहा था। एक ओर मेरी जन्मदात्री तो दूसरी ओर मेरी पालनहारी, दोनों ने मुझे पुनः खड़ा कर दिया। मेरे जीवन का यह पहला अनुभव नहीं है, मेरे परिवार एवं मुझ पर गैया मैया की सदैव कृपा रही है।

मैं, मैया की शक्ति के साथ वापस आई और धीरे–धीरे चलने लगी। अपने सभी दैनिक कार्य करने लगी। ईश्वर कृपा और गैया मैया के आशीर्वाद से यहाँ भी शुद्ध दूध प्राप्त हो गया। गोमाता ने मुझे शक्ति से भरकर कार्य करने योग्य बना दिया। इस बीच अपनी **गोसम्पदा** के संपादक महोदय जी से भी मेरी बात हुई कि मैं लेख भेज पाऊँगी या नहीं; यह गोमाता की इच्छा और उनके आशीर्वाद से ही संभव हो सकता है! उन्होंने भी मुझे विश्वास दिलाया कि अवश्य हो पाएगा। यह बात सत्य भी हुई कि निरंतर गोमाता के लेख भेजने के चिंतन में, मन में एक ऐसी ऊर्जा का संचार हुआ कि मैं नियमित रूप से अपना लेख भेजने में सक्षम हो पायी।

यह एक ऐसा ऋण है जिसे कभी नहीं चुकाया जा सकता। बस, अपने हृदयतल में उठी भावनाओं को इस कलम से उतारकर मैं कृतज्ञता ज्ञापित कर रही हूँ। सभी भारतवासियों से आग्रह भी करती हूँ कि **गैया मैया** को भी अपने घर का सदस्य बनाएँ, उससे प्रेम करें। **जो लोग गाय रखते हैं, कृपया दूध में मिलावट न करें, क्योंकि इस पृथ्वी लोक पर मात्र गोमाता के दुग्ध में ही अमृत है, कहीं और नहीं। अतः जीवनदायिनी गैया मैया की रक्षा करें।**

जब भी निकट तेरे हूँ आती,
हृदय प्रेम से भर जाता है,
यह मेरा नहीं, तेरा प्रेम है, मैया!
जो मुझमें उमड़कर आता है।
जब भी निकट तेरे हूँ आती,
चित्त प्रसन्न, मन शांत हो जाता है,
तेरे ध्यान में जब मग्न हो जाती,
मैया! सब स्वर्ग बन जाता है।

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी., आयुर्वेद)

दैनिक जीवन में गोमूत्र अर्क का महत्व

गोमूत्र अर्क उसे कहते हैं, जो देसी स्वस्थ गाय के गोमूत्र को बाष्पीकृत करके एकत्रित किया जाता है। निसर्गतः गोवंश विचरण करते समय जो विभिन्न वनस्पतियों का सेवन करता है उसके गुण भी उनके गोमूत्र में दिखाई देते हैं। गोमूत्र में व्हीटामिन्स्, मिनरल, युरिया, हॉर्मोन्स् भी पाए जाते हैं। सूक्ष्म मात्रा में उपस्थित ये घटक हमारे शरीर के लिए आवश्यक मात्रा में ही उपयुक्त हैं। **''अति सर्वत्र वर्जयेत्''** इस उक्ति के अनुसार गोमूत्र अर्क का उपयोग एक ही व्यक्ति के लिए अलग–अलग ऋतु में भिन्न मात्रा में होगा। साथ ही शरीर की अवस्था का भी ख्याल रखना आवश्यक है। अतः चिकित्सक का योग्य मार्गदर्शन लेने से अधिक लाभ हो सकता है।

गोवंश जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक बिना मांगे गोमूत्र एवम् गोबर देता है। अगर हमने उसे जमाकर उसको उपयोग में नहीं लिया तो वो जमीन में चला जाता है। भूमिपोषण में इनका बहुत बड़ा योगदान है। उस मार्ग द्वारा वे घटक पौधे के द्वारा लिए जाते हैं। सब्जी, फल, अनाज में भी यह उत्तम मात्रा में पाए जाते हैं। अतः गोवंश आधारित कृषि जनसामान्य के स्वास्थ्य रक्षा हेतु अत्यंत आवश्यक है। उसके साथ –साथ भूमि में संचित जल को विषमुक्त रखने में भी गोबर–गोमूत्र का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। संपूर्ण विश्व में अधिक से अधिक लोग इसका सेवन करें तब अधिकतम रोगों से कष्टमुक्ति का अनुभव वे ले सकते हैं।

वर्तमान स्थिति में सभी तरफ से शरीर पर विष का आक्रमण होने से हमें अपनी सुरक्षा बढ़ाने की आवश्यकता है। उसमें **कामधेनु गोमूत्र अर्क** का महत्त्वपूर्ण योगदान हो सकता है। कामधेनु गोमूत्र अर्क का उपयोग दैनिक जीवन में विभिन्न पद्धति से कर सकते हैं। मनुष्य के सिर से लेकर पांव तक यह लगाने के काम भी आता है।

चीनी मिट्टी के छोटे से

कटोरे में अपने घर के एक कोने में इसे खुला रखें। वातावरण में इसकी हवा का बाष्पीकरण होने से, सूक्ष्म विषाणु वहाँ से दूर भागते हैं। इसके द्वारा अनेक हवा द्वारा फैलने वाली बीमारियों से (इन्फेक्शन से) हम अपने परिवार को बचा सकते हैं। त्वचा में जहाँ भी खुजली हो रही हो, वहाँ लगा लेवें। दिन में 3—4 बार लगा सकते हैं।

पांच मिली लीटर (एमएल) कामधेनु गोमूत्र अर्क सौ मि.ली. पानी में मिलाकर सुबह खाली पेट सेवन कर सकते हैं। चिकित्सक का परामर्श लेना अधिक लाभ दे सकता है। यकृत (Liver), वृक्क (Kidney) एवं त्वचा (Skin) की बीमारी में इसका विशेष लाभ मिलता है।

कर्णशूल (कान के परदे में छेद नहीं होना चाहिए) की अवस्था में दो बूंद कान में लाभदायक हो सकता है। गला खराब हो, दांत में दर्द, मसूडों में सूजन आदि अवस्था में कामधेनु गोमूत्र अर्क को पानी में मिलाकर कुल्ले करने से लाभ होता है। दिन में तीन—चार बार ऐसा तीन से पाँच दिन तक करने से लाभ होते देखा गया है। जख्म को कामधेनु गोमूत्र अर्क के द्वारा नित्य साफ करने से पस होने की संभावना नष्ट होती है।

सिर के बाल में खुजली हो रही हो तब कामधेनु गोमूत्र अर्क बालों की जड़ में लगाकर दस से पंद्रह मिनट तक छोड़ दें। तदुपरान्त बाल धो लेवें। ऐसा तीन से पांच दिन तक एक दिन छोड़कर करने से पहले ही दिन लाभ ध्यान में आता है।

अधिक जानकारी के लिए गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र के शिवाजीनगर दवाखाने से 9405701253 पर संपर्क कर चिकित्सकीय परामर्श ले सकते है।

वर्तमान पर ध्यान

क्या हम यह नहीं जानते कि वह जो अतीत के गर्भ में विलीन हो गया है अथवा वह जो मर गया है, उसे वापस लाने का कोई उपाय नहीं है, तो फिर उसकी दुखद स्मृति में खोने का क्या लाभ? दूसरी ओर उसकी भी कैसी चिंता, जो अभी आया ही नहीं अथवा जो अनिश्चित है। विवेकशील मनुष्य जानता है कि भूत के संबंध में अतिशय शोक अथवा भविष्य की अनावश्यक उधेड़बुन वर्तमान को नष्ट कर देती है। वर्तमान में जीना और उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ करना ही पांडित्य है। बीता हुआ कल अवश्यंभावी था और आने वाला कल अनिश्चित। अतः हमें जो भी करना है, वह आज और अभी ही करना है।

भगवान महावीर से एक बार राजकुमार अतिमुक्त ने कहा, "भंते मैं प्रव्रजित यानी संन्यासी होना चाहता हूं। भगवान ने कहा, विलंब मत करो, शीघ्र प्रव्रजित हो जाओ। आशय यह कि आप भविष्य की योजनाएं बनाएं, उसमें कोई समस्या नहीं। दरअसल समस्या तब आती है, जब आपका वह विचार महज कल्पना होकर रह जाता है, आपका संकल्प नहीं बन पाता। आप बीच—बीच में अपनी उन कल्पनाओं की गठरी को खोलकर बैठ जाते हैं और उन पर बार—बार मंथन कर तथा भविष्य में उनके येन—केन—प्रकारेण चरितार्थ हो जाने का भाव लिए खुश होते रहते हैं। यही अकर्मण्यता हमें सफल नहीं होने देती।

महान लेखक लियो टॉलस्टॉय ने सार्थक जीवन के लिए तीन प्रश्नों का उत्तर आवश्यक माना है। एक, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण समय क्या है? दो, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन है? तीन, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या है? उन्होंने आगे इन प्रश्नों के समाधान भी बताए हैं। आपके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय है, यह वर्तमान, जो तेजी से अतीत बनता जा रहा है। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति वह है, जो वर्तमान में आपके समक्ष है और सबसे महत्वपूर्ण कार्य है उसका उपकार करना। ये तीन मंत्र क्रांतिकारी साबित हो सकते हैं, बशर्ते हम इन्हें अपने जीवन में भी उतार सकें।

दिनेश उपाध्याय (अ. भा. गोरक्षा प्रमुख)

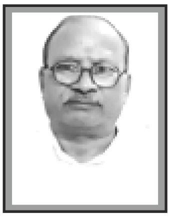

विश्व हिन्दू परिषद-गोरक्षा विभाग की
जयपुर में अखिल भारतीय बैठक

''भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद'' गोरक्षा विभाग–विहिप की तीन दिवसीय अखिल भारतीय बैठक 07 से 09 अक्टूबर, 2025 तक वीरों की पवित्र–पावन भूमि–जयपुर (राजस्थान) में स्थित स्वामी लीलाशाह भवन, सेक्टर–28, प्रताप नगर, में अत्यन्त उत्साह आनन्द के साथ सम्पन्न हुई। बैठक गोपूजन, गोस्तवन, गो–आरती, दीप प्रज्वलन के साथ प्रारम्भ हुई। बैठक में भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद' ट्रस्ट के न्यासी, संरक्षक एवं क्षेत्र टोली के पदाधिकारी व देश के सभी प्रान्तों से ट्रस्ट के प्रान्त अध्यक्ष, प्रान्त मंत्री (ट्रस्ट मंत्री), प्रान्त कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख, सह प्रान्त गोरक्षा प्रमुख उपस्थित रहे। 40 प्रान्तों का प्रतिनिधित्व रहा जिसमें से 156 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। पूज्य स्वामी हरिदास वेदान्ती जी महाराज ने उपस्थित होकर उद्घाटन सत्र की शोभा बढ़ाई।

उद्घाटन में माननीय दिनेश उपाध्याय जी (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख) ने प्रस्तावना रखी। उन्होंने तीन दिन के सत्रों के विषयों की जानकारी दी। इस अवसर पर राजस्थान का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। राजस्थान सरकार के पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत द्वारा प्रदेश सरकार द्वारा योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की गयी। विश्व हिन्दू परिषद के संयुक्त महामंत्री मा. स्थाणुमलयन जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। तत्पश्चात भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. गुरु प्रसाद सिंह जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया।

भारतीय गोवंश रक्षण – संवर्द्धन परिषद के महामंत्री मा. श्री नारायण अग्रवाल जी ने प्रतिवेदन रखा और गत वर्ष आयोजित बैठक की कार्यवाही संक्षिप्त में बतलाई। साथ ही आगामी वर्ष (2025–26) हेतु परिषद का बजट श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसका सर्वसम्मति से ऊँ ध्वनि के साथ अनुमोदन किया गया। केन्द्र व प्रान्त से आए हुए शोक प्रस्ताव मा. शंकर गायकर जी

द्वारा प्रस्तुत किया गया, और एक मिनट मौन रख कर सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गयी।

मा. श्री नारायण अग्रवाल जी द्वारा गाय और गौशाला, श्री गोपालभाई सुतरिया ने कृषि प्रशिक्षण, मा. अजीत महापात्र जी ने गोसेवा एवं गोविज्ञान परीक्षा पर प्रकाश डाला। श्री शैलेन्द्र सिंह जी अ. भा. गोविज्ञान परीक्षा प्रमुख ने परीक्षा को सफल बनाने का संकल्प लिया। श्री केशव राजू (अखिल भारतीय सह गोरक्षा प्रमुख) ने संगठनात्मक, डॉ. नंदिनी भोजराज (गोभक्त महिला प्रमुख) ने गोभक्त महिला के कार्यों की जानकारी दी। श्री राजेन्द्र पुरोहित ने घरेलू गोउत्पाद प्रशिक्षण, श्री सोहन विश्वकर्मा ने गोउत्पादों की विक्री व्यवस्था पर प्रकाश डाला। डॉ. प्रज्ञान त्रिपाठी जी ने पंचगव्य चिकित्सा, श्री सुनील मानसिंहका जी ने गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, डा. रामस्वरूप चौहान जी ने पंचगव्य अनुसंधान का महत्व, डॉ. नरेश शर्मा जी ने गोसम्पदा के विस्तार एवं आर्थिक तंत्र की मजबूती पर प्रकाश डाला। डॉ. गुरु प्रसाद सिंह जी ने सरकारी योजनाओं के बारे में और श्री लाल बहादुर सिंह जी ने गोउत्सवों के संदर्भ में जानकारी दी।

विहिप के संयुक्त महामंत्री मा. स्थाणुमलयन जी ने संघ के शताब्दी वर्ष की योजना, पंच परिवर्तन एवं नशा मुक्ति पर विचार व्यक्त किये। जोधपुर के श्री निहाल जी ने गाय और शिक्षा के बारे में जानकारी दी। श्री शशांक शेखर जी ने गाय और कानुन के बारे में जानकारी देते हुए एक प्रस्ताव का वाचन किया, जिसका श्री जसराज श्री श्रीमाल एवं डॉ. विवेक शर्मा जी ने अनुमोदन किया।

बैठक के दौरान आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक

मा. दिनेश उपाध्याय जी ने करणीकार्य संगठन की कल्पना ग्राम तक विस्तार, केन्द्र के ट्रस्ट के एक लाख के संरक्षक, प्रान्त के ट्रस्टों का आर्थिक स्वावलम्बन, गोसम्पदा के विज्ञापन व विस्तार, विभिन्न प्रशिक्षणों की व्यवस्था, पूर्णकालीन वृद्धि आदि पर प्रकाश डाला, साथ में जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

मा. राष्ट्रीय अध्यक्ष गुरु प्रसाद सिंह जी ने डॉ. रामस्वरूप चौहान जी को उपाध्यक्ष बनाये जाने की घोषणा की। तथा पंजाब, हिमाचल, जम्मू–कश्मीर प्रान्तों के पालक की जिम्मेदारी भी उन्हें दी गयी और श्रीमती सीमा पाण्डेय जी को पटना क्षेत्र का गोभक्त महिला प्रमुख की जिम्मेदारी दी गयी।

समापन सत्र में पूज्य प्रकाश दास जी महाराज ने देशभक्ति गीत से सभी कार्यकर्ताओं को उत्साहित किया। उसके बाद गोरक्षा विभाग के संरक्षक मा. हुकुमचन्द जी सावला ने गोरक्षा–गोसेवा, गाय की महिमा व गाय से जुड़ने के संदर्भ में प्रेरणादायी एवं ओजस्वी मार्गदर्शन दिया। सभी कार्यकर्त्ताओं ने अत्यन्त जोश के साथ गाय की रक्षा का संकल्प लिया। अन्त में अध्यक्ष मा. गुरु प्रसाद सिंह जी ने सभी का आभार प्रदर्शन एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात पूर्णता मंत्र एवं जयघोष के साथ बैठक विधिवत सम्पन्न हुई।

गोमाता की जय

प्रस्ताव

विश्व हिन्दू परिषद–गोरक्षा विभाग की गत माह जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय बैठक में पारित किया गया प्रस्ताव यहां प्रस्तुत है

– सम्पादक

भारत की सनातन संस्कृति का मूल आधार हमारा गोवंश है। भारतीय गाय केवल पशु नहीं, अपितु **"माता"** के रूप में पूजनीय है। इसी आधार पर हजारों वर्षों के आक्रमणों के बावजूद हमारी संस्कृति हिमालय की भांति अविचल और अडिग रही। दुर्भाग्य से आज वही गोमाता सड़कों पर पॉलिथीन खाकर दर्दनाक मृत्यु हेतु विवश है। पॉलिथीन और रासायनिक प्रदूषण से नदियाँ दूषित हो रही हैं, मृदा बंजर हो रही है और भूमिगत जल का संचयन रुक गया है, जिसके दुष्परिणामस्वरूप भारत के कई महानगरों में जल संकट विकराल रूप ले चुका है। गोवंश का संरक्षण केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारत की स्वास्थ्य, पर्यावरण, जैविक कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विरासत के लिए अनिवार्य है। गोचर भूमि का अतिक्रमण, अवैध गोहत्या, तस्करी तथा विदेशी नस्लों के प्रभाव से हमारी दिव्य भारतीय नस्लें समाप्त हो रही हैं। इस बैठक में संत समाज, कृषक, गोभक्त और गोरक्षक ने एक स्वर में मांग की है कि सरकार और समाज मिलकर ठोस कदम उठाएँ, जिससे गोवंश की रक्षा हो और भारत की संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था की रक्षा हो सके।

सरकार से अपेक्षाएँ :–

1. गाय को **"राष्ट्रीय धरोहर"** घोषित किया जाए तथा गोपाष्टमी को **''राष्ट्रीय पर्व''** बनाया जाए।
2. भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण व गो–विज्ञान शोध एवं अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु **"गोवंश संरक्षण–संवर्धन मंत्रालय"** की स्थापना की जाए।
3. गोहत्या रोकने हेतु कठोर केन्द्रीय कानून बनाए जाएँ और सख्ती से लागू किए जाएँ।
4. गोचर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराकर **गोचर प्राधिकरण** का गठन किया जाए और गौशालाओं के विकास हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।
5. कत्लखानों के स्थान पर गौ–अभयारण्य स्थापित किए जाएं।
6. भारत से मांस निर्यात पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाए। बीफ निर्यात की आड़ में चल रही अवैध गोवंश–हत्या और तस्करी को रोकने हेतु निर्यातित मांस की रैंडम सैम्पलिंग एवं DNA टेस्टिंग अनिवार्य की जाएं।
7. राष्ट्रीय राजमार्गों एवं टोल नाकों पर हीट सेंसर कैमरे लगाए जाएँ ताकि गोवंश–तस्करी रोकी जा सके।
8. कत्लखानों के अपशिष्टों का प्रयोग कृषि क्षेत्र में उत्पादन बढ़ाने की **"बायो–स्टिमुलेंट खाद नीति"** को पूर्णतः समाप्त किया जाए, साथ ही सरकार के द्वारा इस नीति पर हाल में ही लगाये गए स्थगन का हम समर्थन करते हैं।
9. गोवंश के लिए मांसयुक्त चारे के उत्पादन, भंडारण और बिक्री पर पहले से लागू प्रतिबंध को सख्ती से लागू किया जाए, साथ ही इन आहारों के प्रयोग से उत्पादित विदेशी डेयरी उत्पादों के आयात के बहिष्कार की भारत सरकार की नीति का हम समर्थन करते हैं।
10. देशभर में गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन की योजनाओं को राष्ट्रीय मिशन के रूप में चलाया जाए और इसके लिए अलग से बजट सुनिश्चित किया जाए।
11. गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था को राष्ट्रीय नीति में शामिल किया जाए। पंचगव्य, गोबर, गोमूत्र, जैविक खाद आदि के उपयोग को बढ़ावा देकर जैविक कृषि, औषधि निर्माण, स्वदेशी उद्योग और ग्रामीण रोजगार को प्रोत्साहित किया जाए।
12. विद्यालय और महाविद्यालयों में गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन के विषय को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
13. गोवंश–तस्करी को गैर–जमानतीय अपराध घोषित कर कठोर दंड का प्रावधान किया जाए तथा प्रत्येक थाने में विशेष पुलिस अधिकारी नियुक्त किए जाएं।
14. गोवंश–संरक्षण से संबंधित मामलों हेतु विशेष न्यायालय (फास्ट ट्रैक कोर्ट) और विशेष अभियोजन अधिकारी नियुक्त किए जाएं।

समाज से अपेक्षाएं :–

1. दैनिक जीवन में पंचगव्य और गोउत्पादों का उपयोग बढ़ाएं।
2. देवपूजन, यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठानों में केवल गोघृत का ही प्रयोग करें।
3. दैवीय अनुष्ठानों में सवत्सा गौ के दूध का प्रयोग करें ताकि गौशालाओं और दुग्ध उत्पादन प्रतिष्ठानों में बछड़ों पर अत्याचार रोका जा सके।
4. गर्भाधान हेतु बलिष्ठ और समान नस्ल के देशी नंदियों (साँड़) का प्रयोग करें, विदेशी नस्ल का सीमेन और कृत्रिम गर्भाधान बहिष्कृत करें।
5. पंचगव्य आधारित कृषि, औषधि, उद्योग और ग्राम–आधारित अर्थव्यवस्था अपनाकर आत्मनिर्भरता बढ़ाएं।
6. अपने क्षेत्र में गौशालाओं की रक्षा, गोवंश हत्या रोकथाम और गोसेवा कार्यों में सक्रिय योगदान दें।

पंच–परिवर्तन :–

1. सामाजिक समरसता हेतु समाज के विभिन्न वर्गों को गोसेवा के माध्यम से जोड़कर प्रेम और सौहार्द बढ़ाएँ।
2. कुटुम्ब प्रबोधन, परिवार को गोवंश आधारित जीवनशैली का केंद्र बनाएं। बच्चों में गोदुग्ध पान के साथ गोवंश सेवा–संवर्धन के संस्कार विकसित करें।
3. पर्यावरण संरक्षण के लिए गोमूत्र, गोबर और पंचगव्य आधारित उत्पादों से रासायनिक प्रदूषण कम करें।
4. स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के लिए गोवंश आधारित उद्योग और पंचगव्य उत्पादों के माध्यम से ग्रामीण रोजगार और स्थानीय उद्योग बढ़ाएं।

नागरिक कर्तव्य

प्रत्येक नागरिक गोवंश की हत्या रोकने और राष्ट्रहित में सक्रिय भूमिका निभाए।

अखिल भारतीय बैठक में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि गोवंश संरक्षण और संवर्द्धन केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कर्तव्य है। इस दिशा में सरकार को कठोर कदम उठाने चाहिए, समाज को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए और प्रत्येक नागरिक गोमाता–गोवंश के संरक्षण में सक्रिय भागीदार बने। यही भारत की संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था का स्थायी समाधान है।

इस राष्ट्रीय बैठक में हम सभी गोभक्त गोमाता को साक्षी मानकर संकल्प लेते हैं कि हम सरकार द्वारा निर्धारित जिम्मेदारियों को लागू कराने में सहयोग करेंगे और साथ ही परिषद् द्वारा पारित गोमाता –गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन संबंधी दायित्वों का पूर्ण निष्ठापूर्वक पालन करेंगे।

प्रस्तुतकर्ता–शशांक शेखर
(अखिल भारतीय विधि प्रमुख)

अनुमोदनकर्ता
१. जसराज श्री श्रीमाल (उपाध्यक्ष)
२. डॉ. विवेक शर्मा (केन्द्रीय मंत्री)

अखिल भारतीय बैठक, जयपुर (राजस्थान) में लिए गये महत्वपूर्ण निर्णय

1. गोभक्त महिला को प्रान्तशः सूची–दिल्ली सम्मेलन हेतु लानी है।
2. प्रान्तशः संगठन की रचना चयनित जिला, चयनित प्रखण्ड, चयनित ग्रामों की सूची लाना है।
3. आर्थिक स्वावलम्बन के प्रयासों की जानकारी।
4. प्रान्त की स्मारिका की योजना एवं क्रियान्वयन।
5. प्रान्त के प्रशिक्षण केन्द्रों की सूची। 1. कृषि प्रशिक्षण, 2. पंचगव्य प्रशिक्षण, 3. घरेलू उत्पाद प्रशिक्षण, 4. गोकृपा अमृतम्।
6. घरेलू गोउत्पाद के प्रशिक्षण हेतु क्षेत्र में 2 दिन के वर्ग की तिथि जिसमें हर प्रान्त के 4–5 कार्यकर्ता रहें।
7. गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, देवलापार प्रशिक्षण में जाने वालों की सूची।
8. गोविज्ञान परीक्षा के क्रियान्वयन की जानकारी।
9. गोपाष्टमी उत्सवों की जानकारी।
10. प्रान्त में 1. गोआधारित खेती करने वालों किसानों की सूची। 2. पंचगव्य में भूमिका निभाने वालों की सूची। 3. घरेलू गोउत्पाद में भूमिका निभाने वालों की सूची। 4. गोकृपा अमृतम् का प्रयोग करने वाले बन्धुओं की सूची।
11. आदर्श गौशाला एवं गोवंश आधारित आदर्श गांवों की सूची।
12. प्रान्त में गोवंश आधारित कार्य करने वाली सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं की सूची।
13. पूर्णकालीन, वानप्रस्थी संभावित बन्धुओं की सूची लाना है।
14. गोसम्पदा के सदस्यों की सूची।
17. एक लाख रुपये के संरक्षक बनने वालों की सूची।
18. हर माह गोसम्पदा के लिए विज्ञापन देने वालों की सूची।
19. केन्द्र समिति, क्षेत्र टोली एवं केन्द्रीय ट्रस्ट हेतु संभावित नाम। आगामी 2026 हेतु।
20. जहां अनुसंधान केन्द्र की योजना उसकी प्रगति की जानकारी।
21. केन्द्रीय अधिकारी का प्रान्तशः प्रवास की जानकारी।
22. आगामी संच बैठक जनवरी–फरवरी, 2026 हेतु स्थान की जानकारी।
23. जिस प्रान्त में ट्रस्ट नहीं बना है वहां शीघ्र बनें, इसकी चिंता, जानकारी।
24. शोक प्रस्ताव जो पारित हुए उनके घर पत्र जायें, इसलिए उनके पता केन्द्र को शीघ्र भेजे जाएं।
25. दायित्व बोध वर्गों की प्रगति एवं उनके दायित्व के बिन्दु लिखकर दिए जाएं।
26. जयपुर बैठक के प्रस्ताव का प्रचार–प्रसार हो।
27. विमर्श हेतु **गोरक्षा विभाग गोध्वनि समूह** बनाया गया है।

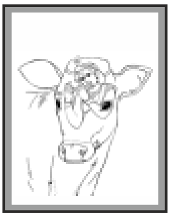

गोरक्षा विभाग की अ. भा. संच बैठक अहमदाबाद में संपन्न

बंशीगीर गौशाला, अहमदाबाद (गुजरात) में क्रियान्वयन के बिन्दू

2. गोभक्त महिला सम्मेलन 12, 13, 14 फरवरी, 2026, छतरपुर, दिल्ली का सूचना पत्रक दिया गया है।
3. गोभक्त महिला सम्मेलन में सम्मानित करने वाली महिलाओं की सूची शीघ्र दिल्ली कार्यालय भेजें।
4. सम्मेलन में प्रदर्शनी हेतु चार्ट एवं गोउत्पाद के विक्री हेतु स्टाल भी लगाना उचित रहेगा।
6. प्रान्त गोरक्षा प्रमुखों एवं सह गोरक्षा प्रमुखों द्वारा अपने प्रान्त की माताओं/बहनों को लेकर आना व 14 फरवरी, 2026 को वापस लेकर जाना।
7. संच बैठक 13 फरवरी, 2026 को प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक रहेगी।
8. संगठनात्मक दृष्टि से प्रान्तों में प्रान्त, टोली चयनित जिला टोली, चयनित प्रखण्ड टोली, एवं चयनित ग्राम टोली 5–5 के दायित्व शीघ्र बनें।
9. विभिन्नस्तर पर दायित्ववान कार्यकर्ताओं का दायित्वबोध वर्ग भी लगना चाहिए।
10. इनकम टैक्स का आई डी व पासवर्ड एवं आडिट रिर्पोट दिल्ली केन्द्रीय कार्यालय भेजें।
11. गोसम्पदा के पाठकों का विस्तार एवं पत्रिका पहुॅचाने की व्यवस्था।
12. रु. 200/वार्षिक एवं रू. 2000/ की आजीवन सदस्य हेतु केन्द्र से रसीद बुक प्राप्त करना।
14. गोसम्पदा–गोपाष्टमी विशेषांक में एक लाख व ऊपर की राशि देने वाले संरक्षकों के फोटो एवं पते छापे गये हैं।
15. जिनकी राशि बाद में आई है वे अगले अंक में छापे जा सकेंगे।
16. गोविज्ञान परीक्षा का लक्ष्य संघ के गोसेवा संयोजकों के साथ समन्वय बनाकर करना चाहिए।
19. केन्द्रीय अधिकारी प्रवास प्रान्तों में मई तक अवश्य पूरा हो। ऐसा आग्रह।
24. जिन प्रान्तों में ट्रस्ट नहीं बना है वहां शीर्ध गठन की प्रक्रिया की जाये।
26. प्रान्तों में प्रशिक्षण हेतु केन्द्रीय अधिकारियों का 3 दिन का समय लिया जा सकता है।
27. देवलापार व कर्णावती वंशीगीर गौशाला में प्रशिक्षण हेतु कार्यकर्ता अवश्य भेजे जायें।
28. जागरण हेतु प्रान्तशः किसान सम्मेलन, गोभक्त महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन आदि की योजना बनानी चाहिए।

31. पूर्णकालीन व वानप्रस्थी कार्यकर्ताओं के विस्तार की योजना बनायें।
32. पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं का 3 दिन का वर्ग उज्जैन में 7, 8, 9 अप्रैल, 2026 को किया जायेगा।
33. अराटाई एप स्वदेशी है इस पर ''गोध्वनी ग्रुप'' में जोड़ने का आग्रह नीचे तक।
34. जोहोमेल (Zohomail) पर संवाद व सूचना का आदान प्रदान किया जाये। अन्य किसी माध्यम से न किया जाये।
35. जनगणना एवं एसआईआर के सर्वेक्षण में हिन्दू समाज को जागरूक किया जाये। कोई हिन्दू छूट न जाये।
36. हलाल रजिस्टर्ड सामान को न खरीदने हेतु समाज को जाग्रत किया जाये।
37. डॉ रामस्वरूप चौहान जी को इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र का पालक एवं श्रीगोपाल भाई सुतरिया को संच की टोली में जोड़ा गया।
38. प्रान्त में एक आदर्श गौशाला एवं 10 आदर्श गांव की समीक्षा एवं सूची तैयार हो।
40. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष एवं पंचपरिवर्तन के कार्यक्रमों में सहयोग किया जाये।
41. प्रत्येक आयाम अपनी–अपनी टोली का विस्तार (5–7) कार्यकर्ता कर सकते हैं।
42. संच की बातों की चर्चा व क्रियान्वयन प्रान्त के ट्रस्ट एवं टोली के साथ अवश्य करें।

गोरक्षा के विभिन्न कार्यों की ओर ध्यान देने के लिए निम्न योजना की गई–

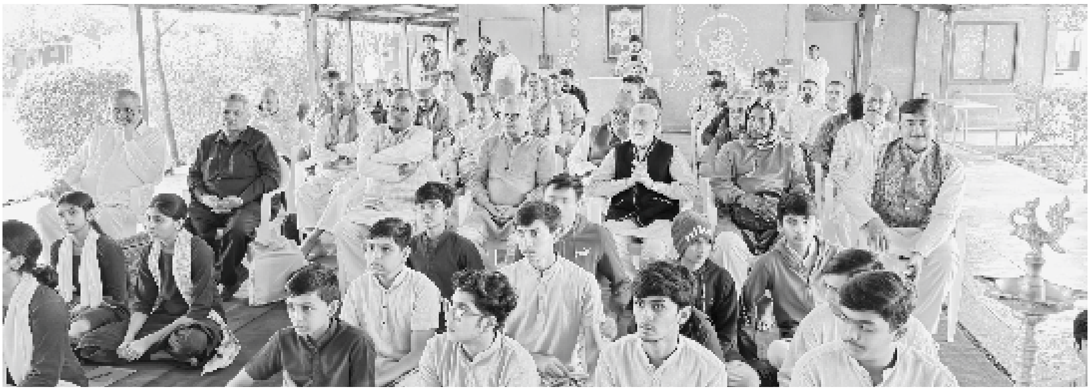

1. डाक्यूमेन्ट्री फिल्म 20 मिनट

1. डॉ नरेश शर्मा,
2. श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी,
3. श्री केशवराजू जी,
4. श्री सुरेन्द्र लाम्बा जी,
5. डॉ रामस्वरूप चौहान जी
6. श्री गोपाल भाई सुतारिया जी

2.गोविज्ञान अनुसंधान हेतु

1. श्री सुनील मानसिंहका जी
2. श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी
3. डॉ रामस्वरूप चौहान जी,
4. श्री केशव राजू जी
5. डॉ माधवी गोस्वामी जी,
6. श्री गोपाल भाई सुतारिया जी

3. गोसम्पदा टोली

1. डॉ नरेश शर्मा जी
2. डॉ विवेक शर्मा जी
3. श्री सुरेन्द्र लाम्बा जी
4. श्री देवेन्द्र नायक जी

4. आर्थिक टोली (संरक्षक)

1. डॉ नरेश शर्मा जी
2. श्री श्रीनारायण जी
3. श्री हुकुमचन्द्र सांवला

5.ट्रस्ट व्यवस्था

1. डॉ विवेक शर्मा जी
2. श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी
3. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी

6. वृन्दावन राल गौशाला

1. श्री श्रीनारायण अग्रवाल जी
2. श्री सुनील मानसिंहका जी
3. डॉ रामस्वरूप चौहान जी
4. डॉ गुरू प्रसाद सिंह जी
5. श्रीमती नन्दिनी भोजराज जी

7. विमर्श समूह

1. श्री केशवराजू जी
2. श्री रामानन्द यादव जी

डॉ गुरू प्रसाद सिंह जी व माननीय हुकुमचन्द सावला जी, माननीय दिनेश उपाध्याय जी एवं श्रीनारायण अग्रवाल जी का सभी योजनाओं में मार्गदर्शन रहेगा।

नागेश शर्मा

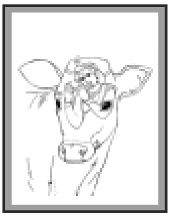

जालोर बनेगा 'एनर्जी हब' पराली और गोबर से दौड़ेंगी गाड़ियां

पाली/जालोर (राजस्थान)। अब प्रदेश में भी बायो–सीएनजी गैस तैयार होगी। **पराली, गोबर समेत नेपियर घास से ईंधन बनाने के लिए जालोर जिले के आहोर के चांदराई में काम शुरू हो गया। यहां 600 करोड़ की लागत से 10 बायो–सीएनजी प्लांट स्थापित किए जाएंगे।** उत्पादन की प्रबल संभावना को देखते हुए गुजरात की कंपनी ने रुचि दिखाई है। प्रत्येक प्लांट 15 एकड़ में स्थापित होगा। 150 एकड़ में ईंधन प्रोडक्शन का हब एक वर्ष में स्थापित हो जाएगा। गुजरात के बाद राजस्थान में यह पहला इतना बड़ा बायो–सीएनजी प्रेजेक्ट लगेगा।

पाइप लाइन बिछाई जाएगी

यहां से उत्पादित ईंधन को प्रदेश के अलग–अलग क्षेत्रों तक पहुंचाने के लिए पाइप लाइन बिछाई जाएगी। पहले चरण में 36 किमी लाइन सांडेराव तक बिछाई जाएगी। जहां गेल–आईजीएल के सहयोग से इसे ईंधन के रूप में मुहैया करवाया जाएगा। गैस का उपयोग सीएनजी के साथ घरेलू (पीएनजी) के रूप में भविष्य में हो सकेगा।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अहम कदम

यह बायो–सीएनजी प्लांट पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक मजबूत पहल साबित होगा। जैविक कचरे और कृषि अपशिष्ट से स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन कर प्रदूषण कम किया जाएगा। प्लांट का कार्य अगस्त 2026 तक पूरा हो जाएगा।

किसानों के लिए सकारात्मक पहल

क्षेत्र में किसानों के लिए यह सकारात्मक पहल होने के साथ भविष्य से जुड़ा बड़ा प्रोजेक्ट है। ग्रीन वेस्ट की डिमांड होने से किसानों को फायदा होगा। बचा हुआ उत्पाद भी खाद के रूप में उपयोगी साबित होगा। वहीं स्थानीय स्तर पर युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

– रोहित चौहान, एसडीएम, आहोर

10 हजार बीघा में होगी नेपियर की खेती

बायो–सीएनजी गैस उत्पादन के लिए नेपियर घास, गोबर और कृषि अपशिष्ट (एग्री वेस्ट) को कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाएगा। चांदराई सहित आस–पास के गांवों की 10 हजार बीघा भूमि पर नेपियर घास की खेती कराई जाएगी।

Dr. Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

COW SUSTAINABILITY

INTEGRATING ECOLOGY, ECONOMY AND ETHICAL STEWARDSHIP

Cow sustainability is increasingly being recognized as an interdisciplinary paradigm that intersects environmental science, sustainable agriculture, rural economic and social ethics. In a rapidly globalizing world marked by ecological degradation, climate uncertainty and agrarian distress, sustainable cow-based systems offer an alternative framework that emphasizes balance, regeneration and inclusivity rather than extraction and exploitation.

From an ecological perspective, cows, particularly indigenous breeds, function as key components of low-input, circular farming systems. Unlike industrial livestock models that depend heavily on external feed, energy and chemicals, traditional cow-centered agriculture operates on principles of resource recycling. Cow dung and urine form the backbone of natural fertilizers, bio-enhancers and pest repellents. These organic inputs restore soil bio-diversity, enhance nutrient cycling and improve soil porosity and moisture retention. Scientific assessments of organic and natural farming systems reveal that such practices not only maintain long-term soil productivity but also reduce chemical runoff, thereby protecting water bodies and surrounding ecosystems.

In discussions on environmental sustainability, the role of cows must be evaluated systemically rather than in isolation. While enteric methane emissions are often cited as an environmental concern, this narrow focus overlooks the comparative impact of industrial livestock systems. Large-scale

dairies and feedlots contribute significantly to deforestation, groundwater depletion and fossil fuel consumption. In contrast, well-managed cow-based mixed farming systems promote pasture regeneration and soil carbon storage, enabling partial carbon sequestration. Thus, cow sustainability, when practiced responsibly, aligns with climate-resilient agricultural strategies.

The economic dimension of cow sustainability is particularly relevant for developing and agrarian economies. For small and marginal farmers, cows represent a multi-functional asset rather than a single-output commodity. Milk production, manure-based inputs, biogas generation and value-added products collectively enhance income stability. Importantly, these activities require relatively low capital investment, making them accessible to economically vulnerable groups. Women, in particular, play a central role in cattle management, dairy processing and allied micro-enterprises, thereby linking cow sustainability with gender empowerment and rural self-reliance.

From a public health and food security standpoint, sustainable cow-based agriculture supports cleaner and safer food systems. Reduced reliance on synthetic fertilizers,

pesticides and antibiotics minimizes chemical residues in food and water. Additionally, milk obtained from indigenous cows raised on natural fodder systems is increasingly being studied for its digestibility and nutritional properties. Beyond direct consumption, the ecological health promoted by cow-centered farming indirectly contributes to human well-being by improving air, water and soil quality.

Cow sustainability also embodies a critical ethical framework. Modern sustainability discourse emphasizes not only efficiency and productivity but also responsibility toward living beings. Ethical cow management prioritizes animal welfare, life-cycle care and humane treatment, challenging purely profit-driven livestock practices. This approach resonates with global sustainability goals that advocate compassionate coexistence between humans and animals.

At the social and cultural level, cows occupy a unique position as symbols of coexistence between humans and nature. However, contemporary relevance demands that this cultural significance be complemented by scientific validation and rational policy frameworks. Institutional support through research, education and extension services is essential to transform traditional knowledge into scalable and credible models of sustainability. Incorporating cow sustainability into academic curricula, agricultural training and rural development planning can also foster informed engagement rather than ideological polarization.

In conclusion, cow sustainability is best understood not as an isolated belief system but as a comprehensive socio-ecological strategy. When grounded in scientific research, ethical responsibility and inclusive economic planning, it offers meaningful solutions to pressing challenges such as soil degradation, climate vulnerability, rural poverty and food insecurity. As societies search for sustainable development pathways, cow sustainability presents a model that harmonizes ecology, economy and ethics in a mutually reinforcing relationship.

Dr. Aastha Pathak

GAUMATA AND HER CARE

Gau Mata holds an unparalleled place in the cultural, spiritual, and social fabric of India, where she is revered not merely as an animal but as a living symbol of motherhood, compassion, and sustenance. From ancient times, Indian civilization has viewed the cow as a gentle provider whose presence nurtures both body and soul, and this reverence is deeply embedded in scriptures, traditions, and everyday rural life. The cow represents selfless giving, patience, and harmony with nature, qualities that resonate strongly with the Indian ethos of coexistence. Villages across the country reflect this bond, where Gau Mata is welcomed into homes, fields, and temples, treated with respect and affection, and cared for as a member of the family. This cultural reverence naturally extends into a strong commitment to cow welfare, which finds practical expression through India's extensive network of veterinary hospitals, gaushalas, and animal care institutions that work tirelessly to ensure the health, dignity, and well-being of cows throughout their lives. India's tradition of veterinary science itself has ancient roots, evident in classical texts such as the Shalihotra Samhita, which demonstrates that animal healthcare was recognized as an important scientific discipline thousands of years ago. Today, this legacy continues through modern veterinary hospitals that combine advanced medical knowledge with the spirit of seva, offering preventive healthcare, vaccination, disease mana-gement, maternity care, nutritional

support, and geriatric services specifically tailored to bovine needs. These hospitals play a crucial role in rural and urban areas alike, supporting farmers, gaushalas, and communities by ensuring that cows remain healthy and productive in a humane and ethical manner. Alongside veterinary hospitals, gaushalas function as sanctuaries of compassion, providing lifelong care, shelter, and medical attention to cows, especially the aged, infirm, or rescued. Many gaushalas, inspired by cultural and social service ideals associated with organizations like the RSS, have evolved into centers of holistic development where cow care is linked with environmental sustainability, organic farming, and rural self-reliance. Indigenous cow breeds such as Gir, Sahiwal, Red Sindhi, Tharparkar, and Rathi are preserved and promoted in these centers, reflecting national pride in India's biodiversity and traditional knowledge systems. Veterinary doctors and paramedical staff stand at the heart of this ecosystem as silent sevaks, often working in challenging conditions and remote regions to provide timely and compassionate care to Gau Mata. Their dedication is further strengthened by mobile veterinary units and emergency services that reach distant villages, ensuring that no cow is deprived of medical attention due to geography or resources.

The relationship between Gau Mata and veterinary institutions in India thus reflects a harmonious blend of tradition and modernity, where scientific advancement is guided by ethical values and cultural respect. This model not only safeguards animal welfare but also supports sustainable agriculture, environmental balance, and the moral foundation of society. In honoring Gau Mata through care rather than words alone, India reaffirms a civilizational commitment to compassion, responsibility, and harmony with all living beings, making veterinary hospitals and gaushalas true temples of service dedicated to the well-being of a sacred and cherished presence.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

पवित्र–पावन महापर्व "मकर संक्रांति"
के शुभ अवसर पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

योगेन्द्र सिंह

सम्माननीय संरक्षण मंडल सदस्य

गाँधी नगर, सिधौली, राष्ट्रीय कन्या इन्टर कॉलेज
के समीप, सिधौली, सीतापुर
मोबाइल नम्बर : 6394932686

नवल डागा, जयपुर 9460142430 (30.11.2025)

गो में सारी औषधि, गो में सारे ज्ञान।
गो को समझें मानवी, गो–माँ है भगवान।।

गाय हमारी मित्र है, गाय खाद्य भण्डार।
गाय क्षीर नित दे रही, गाय लगाती पार।।

गऊ अर्चना हम करें, गऊ हिंद की शान।
गऊ मात का मान कर, गऊ स्वर्ण की खान।।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 जनवरी, 2026

गोसम्पदा "गोपाष्टमी विशेषांक" के लोकार्पण समारोह का विहंगम दृष्य

हस्तिनापुर (मेरठ) में गत माह विश्व हिन्दू परिषद, केन्द्रीय प्रन्यासी मण्डल की आयोजित बैठक में पत्रिका गोसम्पदा के ''गोपाष्टमी विशेषांक'' का लोकार्पण किया गया।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक